

अथवा थापी आदि से किसी वस्तु का कूटा जाना।

**पिट-पिट स्त्री.** (देश.) 1. किसी वस्तु को कूटने अथवा पीटने से उत्पन्न ध्वनि 2. हल्की वर्षा की बूंदों की ध्वनि।

**पिटपिटाना अ.क्रि.** (अनु.) 1. बहुत दुखी ओर लाचार होकर यों ही रह जाना 2. कष्ट से छटपटाना।

**पिटवाँ वि.** (देश.) जो पीटकर बनाया या तैयार किया जाए।

**पिटवाना स.क्रि.** (देश.) [पीटना का प्रेरणा.] 1. ऐसा काम करना जिससे कोई व्यक्ति विशेष पीटा जाए 2. पीटने का कार्य किसी दूसरे से कराना।

**पिटाई स्त्री.** (देश.) 1. पीटने की क्रिया या भाव 2. पीटने पर मिलने वाला पारिश्रमिक या मजदूरी 3. किसी पर पड़ी मार।

**पिटाक पुं.** (तत्.) पिटारा।

**पिटाना स.क्रि.** (देश.) दे. पिटवाना।

**पिटापिट स्त्री.** (देश.) बार-बार पिटने अथवा पीटने की क्रिया या भाव।

**पिटारा पुं.** (तद्.) बाँस, बेंत, मूँज आदि के नर्म छिलकों अथवा तीलियों से बना ढक्कनदार पात्र।

**पिटारी स्त्री.** (तद्.) छोटा पिटारा।

**पिटिका स्त्री.** (तत्.) कृषि. रोगजनकों के संक्रमण के फलस्वरूप पौधे पर उत्पन्न सूजन।

**पिटिया वि.** (देश.) खाकर दूध देने वाली (गाय)

**पिट्स स्त्री.** (देश.) 1. पिटाई 2. शोक या दुख से छाती पीटने की क्रिया या भाव।

**पिटू वि.** (देश.) 1. जो बराबर मार खाता रहता हो 2. जो मार खाकर ही कोई काम करता हो अथवा सीधे रास्ते पर आता हो।

**पिट्टी स्त्री.** (तद्.) भिगोकर पीसी हुई उड़द अथवा मूँग की दाल, पीठी, पिठी।

**पिटू पुं.** (देश.) 1. किसी की पीठ के पीछे सदा रहने वाला, सदा पीछे चलने वाला, अनुगामी, पिछलग्गू 2. हाँ में हाँ मिलाने वाला, चाटुकार 3. पर्वतीय यात्रा में विशेष उपयोगी थैला, बैग जो पीठ पर लाद लिया जाता है।

**पिठवन पुं.** (तद्.) 1. एक प्रसिद्ध क्षुप जो प्रायः दो-ढाई फुट ऊँचे होते हैं जिसके गोल पत्ते तथा बीज दवा के काम आते हैं, पिठौनी, पिथवन।

**पिड़िया स्त्री.** (तद्.) व्रत विशेष जो मार्गशीर्ष प्रतिपदा या द्वितीया को मनाया जाता है।

**पिण्याक पुं.** (तत्.) 1. तिल या सरसों की खली 2. हींग 3. शिलाजीत 4. शिलारस 5. केसर।

**पितंबर पुं.** (तद्.) पीतांबर।

**पितपापड़ा पुं.** (तद्.) गेहूँ की फसल में होने वाला छोटे तथा बारीक पत्तों वाला एक पौधा जिसमें लाल अथवा नीले फूल आते हैं, यह औषधि के काम आता है।

**पितमारक पुं.** (तद्.+तत्.) पिता को मारने वाला, पितृघातक उदा. चित पितमारक जोगु गनि-बिहारी।

**पितर पुं.** (तत्.) मृत पूर्वज, परलोकवासी पूर्वज, कर्मकांड के अनुसार इनके नाम पर श्राद्ध तथा तर्पण आदि किए जाते हैं।

**पितर पख पुं.** (तद्.) पितृ पक्ष।

**पितर पति पुं.** (तद्.) पितृपति, यमराज।

**पितराइँध/पितरायँध स्त्री.** (देश.) पीतल के बरतन में खटाई अथवा खट्टी वस्तु रख देने से उत्पन्न दोष, देर तक रखी रहने पर खाद्य/भोज्य पदार्थ में उत्पन्न दोष।

**पितरिहा वि.** (देश.) 1. पीतल संबंधी 2. पीतल का बना हुआ।

**पितलाना अ.क्रि.** (देश.) किसी खाद्य पदार्थ के पीतल के बरतन में अधिक देर तक पड़े रहने पर उत्पन्न दोष या विकार।